वर्ष :: 33 अंक : 08
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला
वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता
झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

/mithilavarnan

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका

अवश्य पढ़ें-
निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मैनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

बोकारो :: रविवार, 20 नवंबर, 2022 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

ईडी फिर करेगा हेमंत को तलब !

मामला एक हजार करोड़ के अवैध खनन व अकूत संपत्ति का : पहचानने से इनकारे गए प्रेम सहित 4 के वीडियो व कॉल डिटेल मौजूद

शशांक शेखर

दिल्ली/रांची : 1000 करोड़ के अवैध खनन मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) एक बार फिर झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को तलब कर सकता है। विश्वस्त सूत्रों के अनुसार ईडी सीएम हेमंत के जवाबों से कतई संतुष्ट नहीं है। ईडी ने माना है कि हेमंत की कथनी और करनी में अंतर लग रहा है और अगले सप्ताह उन्हें फिर ईडी आफिस में पूछताछ के लिए बुलाया जा सकता है। ईडी कार्यालय के एक सदस्य ने इस संवाददाता को बताया कि हेमंत जो कहते हैं और जो करते हैं, उसमें बड़ा फर्क है। सूत्रों का दावा है कि हेमंत सोरेन ने प्रेम प्रकाश सहित जिन पांच लोगों को पहचानने से भी इनकार कर दिया, उनका वीडियो और कॉल रिकॉर्डिंग प्रवर्तन निदेशालय के पास मौजूद है। ईडी के पास जो दस्तावेज हैं, वो साबित करते हैं कि हेमंत का प्रेम प्रकाश के साथ दशकों से 'प्रेम' रहा है और अगले हफ्ते उन सभी को भी पूछताछ के लिए बुलाया जा सकता है। गौरतलब है कि ईडी ने अवैध खनन से जुड़े मामले में सियासी गलियारों में चर्चित रहे प्रेम प्रकाश को बीते 25 अगस्त को जेल भेजा था। प्रेम प्रकाश के यहां ईडी ने छापेमारी में सीएम हाउस में तैनात दो जवानों के एके-47 और कारतूस

पाए थे।

ज्ञातव्य है कि हेमंत सोरेन ने ईडी की पूछताछ के बाद अपने समर्थकों के बीच एक होने का आह्वान करते हुए कहा कि उनको फंसाने की साजिश रची जा रही है। लेकिन, पांच आईएएस अधिकारी और सात आईपीएस अधिकारी जिस तरह इस पूरे मामले में फायदेमंद रहे हैं, उसका पूरा रिकॉर्ड भी ईडी के पास मौजूद है। सूचना के अनुसार अभिषेक प्रसाद, पिंटू श्रीवास्तव, छवि रंजन सहित 11 अफसरों के साथ बिल्डरों की **(शेष पेज- 7 पर)**

जिसे पहचानते नहीं, उसके साथ फोटो खिंचाते : बाबूलाल

सीएम पर ईडी की कार्रवाई को ले भाजपा का पलटवार भी खूब चल रहा। भाजपा विधायक दल के नेता बाबूलाल मरांडी ने साहिबगंज अवैध खनन मामले के आरोपी बाहुबली दाहू यादव की सीएम हेमंत सोरेन और सीएम के विधायक प्रतिनिधि पंकज मिश्रा के साथ एक तस्वीर ट्वीट कर निशाना साधा है। कहा कि ईडी कार्यालय में सीएम हेमंत सोरेन अवैध खनन मामले के आरोपी को पहचानते नहीं हैं और बाहर दाहू यादव के साथ तस्वीर खिंचाते फिरते हैं। बता दें कि झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने शनिवार को अपने ट्विटर हैंडल से सीएम हेमंत सोरेन, विधायक प्रतिनिधि पंकज मिश्रा और दाहू यादव की तस्वीर पोस्ट की। इसमें जेएमएम कार्यकारी अध्यक्ष हेमंत सोरेन तस्वीर के मध्य में बैठे दिखाई दे रहे हैं। इसमें बाबूलाल मरांडी ने यह भी लिखा है कि क्षमा-याचना के साथ यह तस्वीर (दाहू यादव के साथ) इसलिए पोस्ट करनी पड़ रही है कि मुख्यमंत्री लुटेरों, दलालों, अपराधियों को नहीं जानते कि चतुराई से सफाई देकर ईडी की जांच में बच निकलना चाहते हैं, लेकिन ऐसी कई और तस्वीरें एजेंसियों के हाथ लगी हैं, जिसके सामने हेमंतजी को सच कबूल करना ही होगा।

बोले हेमंत- भाजपा वालों की सरकार गिराने की साजिश

ईडी की कार्रवाई को लेकर सीएम हेमंत सोरेन का कहना है कि यह सब भाजपा वालों की उनके खिलाफ साजिश है। राज्य सरकार की लोकप्रियता देख बीजेपी नेताओं के पेट में दर्द हो रहा है। रघुवर दास के शासनकाल में महोत्सवों और अन्य कार्यक्रमों के नाम पर खुलकर लूट हुई। इन सबकी जांच ईडी क्यों नहीं करता? अगर निष्पक्ष जांच नहीं हुई तो पूरी ताकत से वह इसका विरोध करेंगे। हेमंत ने सीधे तौर पर चैलेंज करते हुए कहा कि अगर उनके साथ कुछ भी हुआ तो मूलवासी-आदिवासी बर्दाश्त नहीं करेंगे। बाहरी चेत जाएं। अब मूलवासी-आदिवासी का राज होगा। इस मामले में हेमंत ने राज्यपाल पर भी निशाना साधा है। कहा कि भाजपा वालों की सरकार गिराने की साजिश को राज्यपाल संरक्षण दे रहे हैं। बहरहाल, अगर यह बीजेपी वालों की साजिश है भी तो अब देखना दिलचस्प होगा कि शह-मात के इस खेल में अमित शाह की जीत होती है या हेमंत की। वैसे सूत्रों की मानें तो बीजेपी के कई ऐसे नेता भी है, जिनकी हेमंत के यहां आमद-रफत है। वे भाजपा के आलाकमान से सूचनाएं लेकर हेमंत तक पहुंचाते हैं। खैर... सियासत का यह खेल एक बार फिर रोमांचक हो चुका है, जिसका रिजल्ट क्या होगा, देखना बाकी है।

... और तार-तार हुई सीएम पद की गरिमा

वैसे तो झारखंड में सत्ता की लड़ाई इसके स्थापना-काल से ही होती रही है। दल-बदल, हार्स ट्रेडिंग जैसे मामले यहां के लिए अब पुराने हो गए हैं। लेकिन, भ्रष्टाचार के मामले में ऐसा पहली बार हुआ है जब पद पर रहते किसी मुख्यमंत्री से ईडी ने पूछताछ की है। ईडी ने न केवल एक हजार करोड़ रुपए के अवैध खनन को लेकर उनसे पूछताछ की, बल्कि उनकी -ल अचल संपत्ति के बारे में भी छानबीन की। विगत दो-ढाई सालों में अर्जित पूरी संपत्ति का ब्यौरा देने का निर्देश उन्हें दिया गया है। सूत्रों के अनुसार मुख्यमंत्री से कई प्रकार के दस्तावेजों की मांग ईडी ने की है। संभावना है कि जब मुख्यमंत्री संबंधित डॉक्यूमेंट सौंप देंगे, उसके बाद आगे फिर पूछताछ की जाएगी।

आविष्कार डीपीएस बोकारो के छात्र अभिनीत ने किया इजाद, 'इंस्पायर अवार्ड मानक' के लिए हो चुका है चयन

खाना खाते वक्त दादा-दादी के कांपते थे हाथ, तो बना दिया एंटी शेकिंग स्पून

कार्यालय संवाददाता

बोकारो : किसी ने सच ही कहा है - आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। बोकारो स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) के होनहार छात्र अभिनीत शरण ने भी इस कथन को इसी रूप में चरितार्थ कर दिखाया है। आम तौर पर बच्चों को अपने दादा-दादी, नाना-नानी से काफी स्नेह होता है। अभिनीत को भी है, लेकिन उसने ऐसा किया, जो शायद ही कोई और करता होगा। खाना खाते वक्त उसके दादा अखिलेश शरण (78) और दादी बच्ची श्रीवास्तव (75) के हाथ कांपते थे। चाहकर भी वे अच्छे से नहीं खा पाते थे। अभिनीत से यह परेशानी देखी नहीं गई और उसने इसका उपाय तकनीक की मदद से ढूंढ निकाला। उसने ऐसा चम्मच इजाद किया, जिससे भोजन का निवाला बगैर हिले-डुले मुंह तक पहुंच सकता है। एंटी शेकिंग स्पून नामक यह उपकरण उसके दादा-दादी के साथ-साथ वैसे तमाम बुजुर्गों के लिए काफी लाभप्रद है, जो न्यूरोलॉजिकल स्थितियों के कारण होने वाले हाथ कांपने संबंधी पार्किंसन नामक बीमारी से ग्रसित हैं। डीपीएस बोकारो में 10वी कक्षा के छात्र अभिनीत शरण ने चम्मच, मोटर, सेंसर, माइक्रो कंट्रोलर, बॉल बियरिंग आदि पुर्जों की मदद से अभिनीत ने यह नई मशीन खुद बनाई है। इस नवोन्मेषता के लिए इंस्पायर अवार्ड- मानक के लिए भी उसका चयन हो चुका है। सरकार की ओर से उसे इसके लिए बाकायदा मॉडल तैयार करने को लेकर 10 हजार रुपए की सहायता-राशि भी प्रदान की जा चुकी है।

ऐसे काम करता है यह खास स्पून

डीपीएस बोकारो में 10वीं कक्षा के छात्र अभिनीत द्वारा तैयार किया गया एंटी शेकिंग स्पून हाथ के कंपन और उस कंपन की विपरीत दिशा में कंपन उत्पन्न करने की यांत्रिकी पर काम करता है। इस प्रक्रिया की शुरूआत इसमें लगे दो सेंसर से होती है। एक सेंसर हाथ कांपने और दूसरा हाथ कांपने की दिशा का पता लगाकर माइक्रो कंट्रोलर को सूचित करता है। उसके बाद मोटर अपना काम शुरू करता है और कंपन तथा हाथ घूमने की विपरीत दिशा में बल उत्पन्न होता है। गिंबल सिस्टम के तहत लगे बॉल बियरिंग **(शेष पेज- 7 पर)**

बुजुर्गों के लिए काफी सहायक

अपने स्वयं से प्रेरित होकर अभिनीत अपने आइडिया लेकर आए। विद्यालय के शिक्षकों के साथ मिलकर काम किया और एंटी शेकिंग स्पून बना लिया। हाथ कंपन करने की विपरीत दिशा में घूमकर यह एंटी शेकिंग स्पून बुजुर्गों के लिए खाना खाने में काफी सहायक है। डीपीएस बोकारो ने हमेशा से अपने छात्र-छात्राओं की नवोन्मेषता व उनकी प्रतिभा को निखारने का काम किया है।

- ए. एस. गंगवार,
प्राचार्य, डीपीएस बोकारो।

– संपादकीय –

ये तरक्की अच्छी नहीं

भारत ने कई मामलों में सारी दुनिया से बेहतर उपलब्धियां भी हासिल की हैं। इस समय डिजिटल व्यवहार में वह दुनिया में सबसे आगे हैं। जहां तक प्रवासी भारतीयों का सवाल है, दुनिया के जितने अन्य देशों में भारतीय मूल के लोग शीर्ष स्थानों पर पहुंचे हैं, दुनिया के किसी मुल्क के लोग नहीं पहुंच सके हैं। भारतीय मूल के लोग जिस देश में भी जाकर बसते हैं, वे हर क्षेत्र में आगे निकल जाते हैं। वे अपने सभ्य और सुसंस्कृत आचरण के लिए सारे विश्व में जाने जाते हैं लेकिन दुनिया की बढ़ती हुई आबादी कई देशों के लिए तो खतरनाक सिद्ध हो ही रही है, वह भारत के लिए भी चिंता का विषय है। जाहिर तौर पर यह तरक्की अच्छी नहीं कही जा सकती। संयुक्त राष्ट्र संघ की ताजा रिपोर्ट की मानें तो पूरी दुनिया की आबादी अब 8 अरब से भी ज्यादा हो गई है। पिछले 50 साल में दुनिया की जनसंख्या जितनी तेजी से बढ़ी है, पहले कभी नहीं बढ़ी। अभी तक यही समझा जा रहा था कि चीन दुनिया का सबसे बड़ी आबादीवाला देश है लेकिन भारत उसको भी मात करनेवाला है। भारत में इधर बढ़े 17 करोड़ लोग उसे दुनिया का सबसे बड़ा देश बना देंगे। ऐसा नहीं है कि भारत सिर्फ जनसंख्या के हिसाब से ही बहुत आगे बढ़ गया है। यदि देश की या परिवार की आबादी बढ़ती चली जाए और उसकी जरूरतों की पूर्ति भी होती चली जाए तो कोई बात नहीं है लेकिन आबादी के साथ-साथ गरीबी और असमानता भी बढ़ती चली जाए तो वह समाज के लिए बोझ बन जाती है। भारत को इस कथित 'विस्फोट' से कुछ लाभ भी हुआ है और वह इसके 'युवा देश' होने का है। भारत की आबादी में 65 प्रतिशत 35 वर्ष से कम आयु के हैं। आबादी का बढ़ता भार सीमित स्रोतों को निगलने की क्षमता रखता है। भारत की अर्थव्यवस्था समूचे विश्व की अर्थव्यवस्थाओं में आज छठे नम्बर पर गिनी जा रही है और संयोग से विश्व की सकल आठ अरब की आबादी का छठा हिस्सा ही इस देश में बसता है जो एक अरब 40 करोड़ के करीब है। परन्तु जब 1950 में भारत की तत्कालीन नेहरू सरकार ने परिवार नियोजन योजना शुरू की थी तो औसतन एक परिवार में छह बच्चे हुआ करते थे। यह औसत घट कर अब 2.1 के आसपास आ चुका है। इसके बावजूद हमारी आबादी चीन से ज्यादा हो चुकी है। मगर इसका मतलब यह नहीं है कि हम इस प्रति परिवार प्रजनन क्षमता को इतना कम कर दें कि आगामी 40 वर्षों में बूढ़ों का देश बन जायें। एक अनुमान के अनुसार भारत में 2050 तक बूढ़े कहे जाने वाले लोगों की संख्या सर्वाधिक होगी क्योंकि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने एक आदमी की औसतन जीवन सीमा को 70 साल से अधिक का बना दिया है। इस मामले में हमें भारतीय समाज की संरचना का अवलोकन करना होगा। प्रकृति की कृपा से भारत में अभी भी जल संकट पैदा नहीं होता है। ईश्वर ने हमें इतने जलस्रोत दिये हैं कि 140 करोड़ की आबादी की जल आपूर्ति जैसे-तैसे हो जाती है। मगर शहरीकरण के बढ़ने से इस मोर्चे पर संकट भी पैदा हो सकता है। हमें सावधानी के साथ बढ़ने की जरूरत है और इसके लिए जरूरी शर्त यह है कि हम अपनी आबादी की रफ्तार को थामें। इसके लिए अगर कानून की व्यवस्था कुछ होती है, तो उसमें भी हरेक देशवासी को आगे आकर साथ देना चाहिए।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

दोस्त दोस्त न रहा, प्यार प्यार न रहा...

- श्रवण कुमार झा -

दोस्त दोस्त न रहा, प्यार प्यार न रहा... फिल्म 'मेरा नाम जोकर' में राजकपूर पर फिल्माया गया सैड सौंग आज के परिप्रेक्ष्य में सटीक और काफी प्रासंगिक है। दरअसल, अब दोस्त दोस्त नहीं रहे और न ही प्यार प्यार रह गया। प्रेम, जिसे सबसे बड़ी पूजा बताया गया है, उसका स्वरूप आज के दौर में पूरी तरह से विकृत हो चुका है। जिस दोस्त से युवक-युवतियां दोस्ती या तथाकथित प्रेम करते हैं, दरअसल वह प्रेम की बजाय केवल हवस की प्यास और वासना की भूख तक ही सिमटकर रह गया है। जबकि, प्रेम का शरीर से नहीं, आत्मा से संबंध है। प्रेम आत्मा से होता है, शरीर से नहीं। जो शरीर से हो, वह तो केवल आकर्षण मात्र है। जो आत्मा से होता है, वही शाश्वत प्रेम है। ऐसा हमारे शास्त्रों में भी वर्णित है और महापुरुषों ने भी कहा है। लेकिन, आज तथाकथित हाई स्टेटस और अत्याधुनिकता की होड़ में भागती जीवनशैली ने प्रेम की परिभाषा बदलकर रख दी है। प्रेम के नाम पर मोहजाल में फंसने-फंसाने का खेल अब जान पर बन आई है। हाल ही में दिल्ली में श्रद्धा और आफताब के तथाकथित प्रेम और उसके बाद हुए हश्र ने यह सोचने पर विवश कर दिया है कि क्या वाकई प्रेम इतना घिनौना होता है? जवाब स्पष्ट है, हरगिज नहीं!

दरअसल, इस एक घटना ने प्रेम के स्वरूप पर सवाल खड़ा करने के साथ-साथ हमारी संस्कृति, सत्चरित्रता और पारिवारिक और सामाजिक और बहुत हद तक धार्मिक परिस्थितियों के लिए भी कई सुलगते सवाल खड़े कर दिए हैं। लड़का-लड़की के प्रति आकर्षण मात्र को प्रेम बताकर उस मां-बाप की भावनाओं और इच्छाओं की बलि चढ़ा देना, जिसने अपनी जिंदगी का हरेक पल उनके लिए जिया, कतई सही नहीं। जबकि आज के तथाकथित प्रेम का दुखद पहलू यह है कि बच्चे शायद समय से पहले बड़े हो जा रहे। इतने बड़े कि उन्हें हवस, शारीरिक आकर्षण ही प्रेम और सबकुछ दिखता है और इसी चक्कर में वे अपनी कोख में 9 माह तक पालने वाली, ताउम्र लालन-पालन करनेवाली मां और जिंदगी देने वाले पिता की उम्मीदों की तिलांजलि दे देते हैं।

इतिहास ही नहीं, वर्तमान भी इस बात का गवाह है कि इसका नतीजा हमेशा बुरा ही होता है। श्रद्धा ने भी अपने मां-बाप की बात न मानी थी। उसके अभिभावक उसे गलत कदम उठाने से समझाते रहे, लेकिन उसने एक न मानी। उसके लिए तो चंद महीनों से संपर्क में रहनेवाला आफताब ही सबकुछ था, 20-25 साल से ज्यादा जो माता-पिता उसकी हर मुराद पूरी करते रहे, वो शायद कुछ नहीं। नतीजा क्या हुआ, आज जगजाहिर है।

दरअसल, आज देश में ऐसी कुस्थिति आम हो चुकी है। अक्सर लड़कियां माता-पिता से विद्रोह कर अपने तथाकथित प्रेमी के वासना-जाल में फंस जाती हैं और जब वह प्रेमी उसे कहीं का नहीं छोड़ता, तो उसके पास उस समय पछताने के अलावा और कोई चारा नहीं रह जाता। देश में अमूमन हर एक-दो दिन पर ऐसी खबरें आती ही हैं। यह हमारी पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्था के लिए बहुत बड़ी समस्या, या यूं कहें कि चुनौती बन चुकी है। घरों में केवल

जागिए... ये प्रेम नहीं, साजिश है!

अथोर्पाजन की होड़ में माता-पिता का अपने बच्चों पर समय न दे पाना, उन्हें शुरू से ही पूजा-पाठ, अध्यात्म, संगीत, प्रकृति-प्रेम आदि से जोड़कर न रखना तथा संस्कार विकसित न करना कहीं न कहीं उनके चारित्रिक पतन का बड़ा कारण है। लिव-इन-रिलेशनशिप जैसी चलन का हमारे भारतीय समाज और संस्कृति में कहीं भी स्थान नहीं रहा है। यह अत्याधुनिकता और पाश्चात्यानुकरण की देन के सिवा कुछ नहीं माना जा सकता। दुर्भाग्यवश, इसे आजकल की पीढ़ी बड़े ही शौक से अपना अधिकार मान रही है और इसका परिणाम अधिकतर वैसा ही होता है, जैसा श्रद्धा के साथ रहा।

वस्तुतः आज के दौर में जितनी अच्छी शिक्षा की जरूरत है, उससे कहीं ज्यादा आवश्यकता बच्चों के चारित्रिक विकास और संस्कार का बीजारोपण करने की है। अच्छे-बुरे का अंतर, स्नेह, सौहार्द्र, प्रेम के वास्तविक मायने आदि बताए जाने की जरूरत है। अभिभावक ही इसकी शुरूआत अपने घर से कर सकते हैं। जब घर-घर यह प्रयास होगा, तो समाज में ऐसा होगा और जब समाज ऐसा होगा, तो जाहिर तौर पर देश में भी सुधार होगा।

अब बात करें लव जिहाद की तो यह वास्तव में आज एक खास समूहवर्ग के लोगों की गजवा-ए-हिंद यानी इस्लाम को जबरन फैलाने की साजिश का अहम जरिया बन चुका है। आतंकी हमले में जहां जानें जाती हैं, वहीं लव जिहाद जान के साथ-साथ संस्कार, परंपरा, चरित्र और सनातन धर्म का भी जानलेवा दुश्मन है। सोशल मीडिया से छद्म नाम के साथ दोस्ती की शुरूआत, फिर संबंध बनाना, फिर उसकी आड़ में भयादोहन कर जबरन धर्म परिवर्तन कराना और जरूरत पड़ जाय, तो नृशंस हत्या तक कर देना इस साजिश का हिस्सा बन चुके हैं। हालांकि, श्रद्धा और आफताब के केस में श्रद्धा आफताब के धर्म से अवगत थी, परंतु उसकी साजिश में वह ऐसा फंसी कि उसे न अपनी और न ही अपने परिवार वालों की फिक्र रही। इसके खिलाफ जहां खुद अपने स्तर से जागरुकता और सावधानी की जरूरत है, वहीं दूसरी ओर सरकारी व कानूनी स्तर पर भी सख्त कदम उठाया जाना जरूरी है। क्योंकि, आए दिन जिस तरह मुहब्बत की आड़ में जघन्य घटनाएं सामने आ रही हैं, उनके लिए दरिंदगी शब्द भी शायद छोटा है। ऐसे में सभी स्तरों पर समझदारी दिखाने और आवश्यक कदम उठाए जाने की नितांत अनिवार्यता है, नहीं तो वह दिन दूर नहीं, जब 'प्रेम' शब्द 'घृणा' का पर्याय बन जाएगा और ऐसी ही कई श्रद्धा बस श्रद्धांजलि का पात्र बनती रह जाएंगी।

(ये लेखक के निजी विचार हैं।)

काव्यकृति

जन्म

सुप्रसन्ना झा, जोधपुर, राजस्थान।

विदेहनंदिनी वैदेही लिये
भूमि अवतार
ऋषि विदेह हर्षित भये,
हर्षित जन-जन द्वार
रानी सुनयना प्रफुल्लित भई,
जनकपुर मे बाजे थाल
अति प्रसन्न प्रजा सब
भयऊ
दिव्य रुप, सुंदर सब
दिखहिं
वैदेही, मांडवी, ऊर्मिला,
श्रुतिकीर्ति
रुप, शील, गुण निधाना
समाचार दिगदिगन्तहि जाना
नामकरण कुलगुरु किन्हीं
विदेह सं वैदेही
जनक सं जानकी
मिथिला सं मैथिली
हलक सीत सं प्रगट
भेलन्हि
सीता नाम जनकनन्दिनी के
पड़लन्हि
विवाह योग्य जब नंदनी
भयई
मातु सुनयना चिंतित होयहिं
सुंदर ,सुयोग्य, सुधर्म वर
चारि
राजर्षि अब सोचन लागि
जे धनुष प्रत्यंचा तोड़हि
तनया हाथ देहूं हम
तिन्हहि।

नारीशक्ति के हाथों चास की कमान तय

नगर निगम चुनाव... घर की बहन-बेटियों और पत्नियों को आगे कर नेता बिछाने लगे सियासी बिसात

संवाददाता

बोकारो : राज्य निर्वाचन आयोग ने चास नगर निगम में होने वाले महापौर पद के चुनाव में अनारक्षित महिला के लिए रिजर्व किया है। फुसरो नगर परिषद के अध्यक्ष पद के लिए अनुसूचित जाति महिला के लिए आरक्षित किया है। इसके साथ ही चास नगर निगम का राजनीतिक तापमान बढ़ गया है। जिसकी आशंका जताई जा रही थी, अंततः वैसा ही हुआ। चास नगर निगम की कमान महिला के हाथों ही होगी। इसका संदेह पहले से ही जताया जा रहा था और अमीर बनने का सपना देख रहे कई नेताजी अपने घर की महिलाओं को उतारने की तैयारी में लग गए थे। इसके पहले कई नए-नए नेताओं का प्रादुर्भाव भी हुआ और गली-मोहल्ले में साफ-सफाई बिजली आदि समस्याओं को लेकर लोगों का के रहनुमा के तौर पर खुद को प्रोजेक्ट करने में लग गए थे। लेकिन, अब मामला साफ हो जाने के बाद इस उलझन पर विराम लग गया है।

बता दें कि मेयर पद महिला आरक्षित होने की संभावना के मद्देनजर नेताओं ने पहले से ही अपनी सियासी जमीन घर की महिलाओं के माध्यम से बनानी शुरू कर दी थी। निवर्तमान मेयर भोलू पासवान ने पहले अपनी मां शनिचरी देवी को मेयर पद का उम्मीदवार घोषित कर दिया। जगह-जगह बैनर-पोस्टर लगाकर इसका बाकायदा प्रदर्शन भी किया गया। गली-मोहल्ले में घूम-घूमकर सहयोग की अपील भी की जाने लगी थी। लेकिन, अब वह अपनी मां की जगह अपनी बहन गौरी को लड़ाने का ऐलान कर चुके हैं। इधर, चास नगर परिषद के पहले उपाध्यक्ष अब्दुल वाहिद खान ने अपनी पुत्री जेबा तरन्नुम को चुनावी मैदान में उतारने का पहले ही फैसला ले लिया था। वहीं, समाजसेवी व कांग्रेस नेत्री पूर्व मंत्री

समरेश सिंह की पुत्रवधू डॉ. परिंदा सिंह तीसरी बार चुनाव लड़ने की तैयारी में हैं। उन्हें प्रबल दावेदारों में माना जा रहा है और ऐसा माना जा रहा है कि अपने ससुर की राजनीतिक विरासत वही आगे बढ़ाएंगी। इसके अलावा समाजसेवी विनोद कुमार अपनी पत्नी संजू देवी और मनोज सिंह अपनी अर्धांगिनी रिंकू देवी को मेयर पद पर लड़ाई में उतारेंगे। बहरहाल, इस बार महिला शक्ति को आगे रखकर चास पर

राज करने को लेकर सियासत गरमा गई है और अंदर ही अंदर तैयारी जोरों पर है। सोशल मीडिया पर भी चुनावी बाजार गर्म हो चुका है।

15 लाख तक खर्च कर सकेंगे मेयर उम्मीदवार

सरकारी सूत्रों के मुताबिक नगर निगम चुनाव में मेयर पद के प्रत्याशी 15 लाख और वार्ड पार्षद के उम्मीदवार 3 लाख रुपए खर्च कर सकेंगे। आयोग ने 2011 के जनगणना को मानक मानते हुए नगर निगम, नगर परिषद और नगर पंचायत क्षेत्र में निकाय चुनाव के दौरान प्रसार-प्रसार के लिए खर्च की सीमा निर्धारित की है। इसके तहत जिस नगर निगम क्षेत्र की आबादी 10 लाख से कम थी, वहां के मेयर उम्मीदवार 15 लाख तथा पार्षद 3 लाख रुपए तक खर्च कर सकते हैं। 30 साल या उससे अधिक की आयु वाले ही मेयर पद के लिए चुनाव लड़ सकेंगे। जबकि पार्षद, का चुनाव लड़ने के लिए 21 साल उम्र जरूरी है। राज्य निर्वाचन आयोग के अनुसार निकाय चुनाव को लेकर 2018 में जो खर्च की राशि निर्धारित की गई थी। इस बार भी प्रत्याशियों के लिए खर्च सीमा वही रखी गई है। बढ़ोतरी नहीं नहीं की गई है। इसके तहत निकाय चुनाव में विभिन्न पदों के प्रत्याशी राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा निर्देशित दायरे में ही प्रचार-प्रसार में खर्च कर पाएंगे। वहीं दूसरी ओर नगर निगम चुनाव को लेकर जहां प्रशासनिक तैयारियां चल रही है वहीं विभिन्न पदों के लिए चुनाव लड़ने वाले भी तैयारी कर रहे हैं।

बूथों तक बनाएं सुगम रूट चार्ट : डीसी

जिला समाहरणालय स्थित सभागार में जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने प्रस्तावित नगर निगम चास, नगर परिषद फुसरो निर्वाचन को लेकर सभी कोषांग के नोडल पदाधिकारियों एवं संबंधित क्षेत्र के बीडीओ, सीओ एवं थाना प्रभारियों के साथ बैठक की। मौके पर उप विकास आयुक्त कीर्ति श्री जी., अनुमंडल पदाधिकारी चास दिलीप प्रताप सिंह शेखावत आदि उपस्थित थे। उपायुक्त चौधरी ने विभिन्न कोषांगों के नोडल पदाधिकारियों से तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने संबंधित क्षेत्र के सहायक निवार्ची पदाधिकारी सह बीडीओ, सीओ को संबंधित थानों के प्रभारियों के साथ संयुक्त रूप से सभी मतदान केंद्रों का भौतिक सत्यापन करने और मतदान केंद्र पर मतदान कर्मियों, सुरक्षा कर्मियों आदि के पहुंचने को लेकर सुगम रूट चार्ट तैयार करने को कहा। वहीं, पुलिस अधीक्षक चंदन झा ने कहा कि नगर निगम चास एवं नगर परिषद फुसरो क्षेत्र में जितने भी लंबित वारंट हैं, उनका तामिला शत प्रतिशत सुनिश्चित करें। अतिसंवेदनशील व संवेदनशील बूथ चिह्नित करने का भी निर्देश दिया गया। उल्लेखनीय है कि नगर निगम चास एवं नगर परिषद फुसरो क्षेत्र में कुल 194 मतदान केंद्र हैं।

उपलब्धि 14 देशों की क्वालिटी सर्किट टीमों ने लिया था हिस्सा, गौरवान्वित हुआ बोकारो

बीएसएल को फिर मिली अंतरराष्ट्रीय ख्याति, जकार्ता में स्वर्ण पुरस्कार

संवाददाता

बोकारो : बोकारो इस्पात संयंत्र की झोली में एक बार फिर अंतरराष्ट्रीय स्तर की ख्याति आई है। 15-18 नवम्बर को इंडोनेशिया क्वालिटी मैनेजमेंट एसोसिएशन (आईक्यूएमए) द्वारा जकार्ता में आयोजित प्रतिष्ठित इंटरनेशनल कन्वेंशन ऑन क्यूसी सर्किल्स (आईसीक्यूसीसी) में बोकारो स्टील प्लांट की तीन टीमों को गोल्ड अवार्ड से नवाजा गया है।

बोकारो स्टील प्लांट की तीन क्वालिटी सर्किल टीमों ने इस सम्मेलन में भाग लिया था। दो क्यूसी टीमें ओजी एवं सीबीआरएस विभाग की क्यूसी संख्या-404 (प्रोग्रेसिव) एवं सिंटर प्लांट की क्यूसी संख्या-200 (परख) ने ऑनलाइन मोड में तथा इंस्ट्रूमेंटेशन एंड ऑटोमेशन विभाग की क्यूसी संख्या-252 (प्रगति) ने ऑफलाइन मोड में भाग लिया था।

इन क्वालिटी सर्किलों का मूल्यांकन अंतर्राष्ट्रीय जजों द्वारा क्वालिटी सर्किलों द्वारा प्रस्तुत परियोजना रिपोर्ट, प्रस्तुतीकरण तथा इंटरव्यू के आधार पर 100 अंको के पैमाने पर किया गया। इस कन्वेंशन में क्यूसी संख्या-404 (प्रोग्रेसिव) ने अपनी परियोजना 'टाटा मेक 2518 मॉडल डम्पर प्लेसर के हाइड्रोलिक लिफ्टिंग बूम हैंगिंग शाफ़्ट का मोडिफिकेशन', क्यूसी संख्या-200 (परख) ने अपनी परियोजना 'आयरन ओर फाइन्स में मिश्रित बोल्डर के कारण सिंटर मशीन के स्टोपेज को कम करना' तथा क्यूसी संख्या-252 (प्रगति) ने अपनी परियोजना 'हॉट स्ट्रिप मिल साईट के जीएमबीएस के सीवी एनालाईजर में ऑटो ड्रेन सिस्टम का क्रियान्वयन' को प्रस्तुत किया था।

बोकारो स्टील के संचार प्रमुख मणिकांत धान के अनुसार, इंडोनेशिया क्वालिटी मैनेजमेंट एसोसिएशन द्वारा 'गुणवत्ता प्रयासों से बेहतर निर्माण' की थीम पर आयोजित इस कन्वेंशन में चीन, भारत, बांग्लादेश, जापान, कोरिया, मलेशिया, इंडोनेशिया, हांगकांग, सिंगापुर जैसे 14 देशों की क्वालिटी सर्किल, सिक्स सिग्मा टीम, इनोवेशन टीम आदि ने भाग लिया था। इसमें बोकारो स्टील को स्वर्ण पुरस्कार मिलना अपने-आप में एक बड़ी उपलब्धि है।

बोकारो में बनेंगे सौर ऊर्जा से संचालित तीन मिनी कोल्ड रूम

जिलास्तरीय चयन समिति की बैठक में सर्वसम्मति से लिया गया निर्णय

संवाददाता

बोकारो : बोकारो जिला जिला अंतर्गत प्राथमिक साख समिति लिमिटेड (पैक्स) में वित्तीय वर्ष 2022-23 में 5 एमटी क्षमता के सौर ऊर्जाचालित मिनी कोल्ड रूम का निर्माण किया जाएगा। इसके लिए उपायुक्त कुलदीप चौधरी के निर्देशानुसार शनिवार को अपर समाहर्ता सादात अनवर की अध्यक्षता में समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में जिला स्तरीय चयन कमेटी की बैठक आयोजित की गई। बैठक में पांच मिलियन टन (एमटी) क्षमता के तीन सौर ऊर्जा चालित मिनी कोल्ड के निर्माण हेतु पिंड्राजोरा पैक्स (चास प्रखण्ड), होसिर पश्चिमी पैक्स (गोमिया प्रखंड) तथा तारानारी पैक्स (चंद्रपुरा प्रखंड) का चयन सर्वसम्मति से किया गया।

केन्द्रीय प्रायोजित योजना कंप्यूटराइजेशन पैक्स अंतर्गत पैक्सों के चयन से संबंधित जिला स्तरीय क्रियान्वयन एवं अनुश्रवण समिति (डीएलआईएमसी) के समक्ष जिला सहकारिता पदाधिकारी, बोकारो द्वारा बोकारो जिला अंतर्गत 70 पैक्सों की सूची चयन हेतु प्रस्तुत की गई। बैठक में अपर समाहर्ता सादात अनवर ने जिला सहकारिता पदाधिकारी, बोकारो को निर्देशित किया गया कि प्रस्तावित सभी पैक्सों की विस्तृत विवरणी उनके भौतिक सत्यापन प्रतिवेदन के साथ आगामी बैठक में प्रस्तुत करेंगे।

बैठक में मुख्य रूप से बोकारो विधायक प्रतिनिधि संजय त्यागी, गोमिया विधायक प्रतिनिधि दुर्गाचरण गोप, जिला सहकारिता पदाधिकारी बोकारो, जिला अंकेक्षण पदाधिकारी सहायोग समितियां बोकारो, जिला विकास प्रबंधक, नाबार्ड, बोकारो, वरीय प्रबंधक झारखण्ड राज्य सहकारी बैंक लिए, बोकारो, सहायक निबंधक, सहयोग समितियां, चास अंचल, चास एवं बेरमो अंचल, तेनुघाट उपस्थित थे।

दहशत... बेरमो अनुमंडल क्षेत्र के कई इलाकों में लंबे समय से जमा रखा है डेरा, उत्पात भी

फिर गुस्से में गजराज

संवाददाता

बोकारो : जिले के बेरमो अनुमंडल क्षेत्र में एक बार फिर जंगली हाथियों का विचरण और उत्पात लोगों के लिए आतंक का सबब बना है। लगातार कई दिनों से हाथियों ने जिले के पेटरवार, कसमार और आसपास के इलाके में अपना डेरा जमा रखा है। शनिवार अहले सुबह पेटरवार वन प्रक्षेत्र अंतर्गत कसमार की पोंडा पंचायत स्थित ठाकुरपोंडा में लगभग हाथियों का एक झुंड पहुंच गया, जिसे से गांव व आसपास में अफरातफरी मच गई। खबर मिलते ही ग्रामीणों का हुजूम हाथियों को देखने जुटने लगी। इससे पहले शनिवार रात को कमलापुर एनएच को पार कर कुलागुजु के किनारे झुंड खांजो नदी पहुंचा। इसके बाद सुरजुडीह से सटे धान खेत में रात भर धान की फसलों को खाकर अहले सुबह ठाकुर पोंडा पहुंच गया। इसके पूर्व, हाथियों के झुंड ने अंगवाली के बंद खदान स्थित जंगल से फुसरो नगर क्षेत्र का रुख कर लिया। इस झुंड में शामिल दर्जनों हाथियों ने जारंगडीह, खेतको, कथारा में उत्पात मचाने के बाद बुधवार को तड़के बंद पड़ी अंगवाली खदान में शरण ले ली थी, जहां से शाम को झुंड ने दामोदर नदी को पारकर फुसरो नगर अंतर्गत कदमाडीह व सिंगारबेड़ा के बीच स्थित जंगल में डेरा डाल दिया। इस दौरान फुसरो नगर अंतर्गत दामोदर नदी की निकटवर्ती सिंगारबेड़ा, कदमाडीह, रेहवाघाट, आंबेडकर कॉलोनी, घुटियाटांड़, भेड़मुक्का आदि क्षेत्र के लोगों में काफी दहशत रही। हाथियों से बचाव करने के लिए कई जगह टार्च व मशाल जलाकर स्थानीय युवाओं ने रात-भर पहरेदारी की। हाथियों के झुंड ने ग्रामीणों की फसलें भी रौंद दी। एक ग्रामीण का झोपड़ीनुमा होटल हाथियों ने तोड़ दिया।

इधर, कथारा स्थित रेलवे कॉलोनी के समीप जंगलनुमा क्षेत्र में 11 नवंबर को जंगली हाथियों के हमले से घायल बरजू मुंडा कि स्थिति काफी चिंताजनक बनी हुई है। बिरजू मुंडा के इलाज में अब तक परिजनों ने लगभग पांच लाख रुपए अस्पतालों में खर्च कर चुके हैं, लेकिन स्थिति में कोई सुधार नहीं दिख रहा है।

राज्यस्तरीय बाल विज्ञान व बाल अधिकार कांग्रेस 8 से

बोकारो : राष्ट्रीय विज्ञान प्रौद्योगिकी एवं संचार परिषद विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार की ओर से प्रायोजित राज्यस्तरीय बाल विज्ञान व बाल अधिकार कांग्रेस का आयोजन इस वर्ष साइंस फॉर सोसायटी, झारखंड द्वारा आगामी 8 से 10 दिसंबर तक नगर के सेक्टर- 4 स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) में होगा। इस वर्ष बाल विज्ञान कांग्रेस का मुख्य विषय स्वास्थ्य और कल्याण के लिए पारिस्थितिकी-तंत्र को समझना तथा बाल

अधिकार कांग्रेस के लिए पर्यावरण संरक्षण का अधिकार रखा गया है। इसमें झारखंड के सभी 24 जिलों से चयनित किए गए प्रतिभागी शामिल होंगे। यह निर्णय साइंस फॉर सोसाइटी की बैठक में सर्वसम्मति से लिया गया। कार्यक्रम के ऑर्गेनाइजिंग प्रेसिडेंट सह डीपीएस बोकारो के प्राचार्य ए. एस. गंगवार ने इस आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसकी मेजबानी डीपीएस बोकारो को दिए जाने पर साइंस फॉर सोसाइटी, झारखंड के प्रति आभार जताया। नेशनल चाइल्ड साइंस कांग्रेस, झारखंड के स्टेट एकेडमिक कोऑर्डिनेटर राजेंद्र कुमार ने राज्यस्तरीय बाल विज्ञान एवं बाल अधिकार कांग्रेस की विस्तृत रूपरेखा पर प्रकाश डाला।

आयोजन रंगारंग कार्यक्रमों के साथ बोकारो में मनाया गया राष्ट्रीय प्रेस दिवस

लोकतंत्र की इमारत को प्रेस-मीडिया ने दी है मजबूती, निभाते रहें दायित्व : डीसी

संवाददाता

बोकारो : राष्ट्रीय प्रेस दिवस के अवसर पर जिला प्रशासन बोकारो की ओर से जिला परिषद कार्यालय परिसर में एक सेमिनार का आयोजन किया गया। मीडिया समाज का दर्पण विषय पर आयोजित इस कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि जिले के उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने किया। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक चंदन कुमार झा, उपविकास आयुक्त कीर्ति श्री, जिला परिषद अध्यक्ष सुनीता देवी, उपाध्यक्ष बबीता देवी, चास एसडीओ दिलीप प्रताप सिंह शेखावत, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी राहुल कुमार भारती, जिला आपदा प्रबंधन पदाधिकारी शक्ति कुमार सहित विभिन्न विभागों के कई वरीय अधिकारी मौजूद रहे। अपने संबोधन में उपायुक्त ने राष्ट्रीय प्रेस दिवस की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए ब्रिटिश शासनकाल मैं पराधीनता और स्वतंत्रता संग्राम मैं प्रेस मीडिया की भूमिका पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि देश को आजादी दिलाने में प्रेस मीडिया ने एक आंदोलन खड़ा कर अहम योगदान निभाया और जनमानस को जागृत किया। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है और यकीनन लोकतंत्र की इमारत को मजबूती प्रदान करने में प्रेस-मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने प्रेस मीडिया के समाज पर प्रभाव तथा प्रशासन व पत्रकारों के बेहतर संबंध पर भी प्रकाश डाला।

उन्होंने राष्ट्रहित में प्रेस-मीडिया को मिली शक्ति एवं दायित्वों का पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ निर्वहन करने पर भी बल दिया। पुलिस अधीक्षक चंदन कुमार झा ने तीन दशक पहले और आज की पत्रकारिता में आए अंतर व चुनौतियों पर चर्चा की। उन्होंने बोकारो में पत्रकारिता के संतुलित दायित्व-निर्वाहन पर संतोष व्यक्त किया। वरीय पत्रकार विजय कुमार झा ने राष्ट्रीय प्रेस परिषद और प्रेस दिवस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए सोशल मीडिया के इस दौर में पारंपरिक पत्रकारिता के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों के बारे में बताया। पत्रकार अजय अश्क ने मीडिया और समाज के बीच के संबंधों पर प्रकाश डाला। जबकि, अरुण पाठक ने पत्रकारिता शीर्षक संबंधी एक कविता सुनाई। कार्यक्रम का संचालन जिला जनसंपर्क पदाधिकारी राहुल कुमार भारती तथा धन्यवाद ज्ञापन सहायक जनसंपर्क पदाधिकारी अविनाश कुमार सिंह ने किया।

इस दौरान गीत-संगीत का भी कार्यक्रम हुआ, जिसमें कलाकार मानवी सिंह और योगेश राज ने एक से बढ़कर एक सदाबहार गीतों की झड़ी लगा दी तथा घंटों समा बांधे रखा। पत्रकारों ने भी गीत गाए।

हफ्ते की हलचल

सीआरपीएफ जवानों के लिए स्वास्थ्य प्रबंधन कार्यक्रम आयोजित

बोकारो : रोटरी चास द्वारा सीआरपीएफ के अधिकारियों एवं जवानों के लिए सीआरपीएफ कैंप मुख्यालय में मानसिक स्वास्थ्य प्रबंधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सीआरपीएफ के निरीक्षक जितेंद्र सिंह ने स्वागत भाषण में कार्यक्रम की महत्ता पर प्रकाश डाला। रोटरी चास के संस्थापक अध्यक्ष संजय बैद ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि जवानों के लिए मनोबल, शांति एवं एकाग्रता बढ़ाने वाले परामर्श कार्यक्रम तनाव को कम करने में मददगार बताया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित सीआरपीएफ के कमान अधिकारी केपी सिंह ने कहा कि वर्तमान समय में हर व्यक्ति तनाव में जी रहा है और तनाव एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, परंतु तनाव को लंबा नहीं खींचना चाहिए। इससे व्यक्ति डिप्रेशन (अवसाद) में आ जाता है। मुख्य वक्ता मनोविज्ञानी रानी अग्रवाल ने जवानों को संबोधित करते हुए कहा कि आज का मानव अपना मनोबल खोता जा रहा है और कमजोर मन तनाव का बड़ा कारण बन रहा है। सिद्धार्थ पारख ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर सीआरपीएफ बटालियन 26 के द्वितीय कमान अधिकारी सुनील कुमार, मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. आशीष कुमार, विनय सिंह, माधुरी सिंह, अर्चना सिंह, धनेश बंका, विपिन अग्रवाल, प्रेम शंकर सिंह, जतिन अग्रवाल सहित काफी संख्या में सीआरपीएफ के जवान उपस्थित रहे।

खुशहाल बोकारो बनाने में महिलाओं की भागीदारी जरूरी : झा

बोकारो : पूर्व प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी की जयंती के अवसर पर स्थानीय स्वयंसेवी संस्था 'खुशहाल बोकारो' की सभा आयोजित की गई। इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर काम के जरिए बोकारो का नाम गौरवान्वित करनेवाली कई महिलाओं को सम्मानित किया गया। साथ ही, खुशहाल बोकारो की पृष्ठभूमि में शहर के युवा वर्ग, महिलाओं, अवकाश-प्राप्त अधिकारियों एवं अन्य लोगों की रचनात्मक भागीदारी पर विचार-विमर्श किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व कर रहे संस्था के संस्थापक अमरेंद्र कुमार झा ने कहा कि सकारात्मक कार्यों से जुड़े लोगों को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। इस दिशा में उन्होंने वर्ष 1993 से ही किए जा रहे अपने प्रयासों की जानकारी दी। देश को सशक्त बनाने में स्व. इंदिरा गांधी की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए श्री झा ने कहा कि खुशहाल बोकारो बनाने में महिलाओं को भी अपनी सशक्त भागीदारी और जिम्मेदारी निभानी होगी। मौके पर डीएवी पब्लिक स्कूल के प्राचार्य एके झा, बोकारो स्टील सिटी कॉलेज में वनस्पति विज्ञान के अवकाश-प्राप्त विभागाध्यक्ष डॉ. केके मिश्र, वरिष्ठ शिक्षाविद केएन झा सहित किरण मिश्र, अनुश्री, राखी झा, रंजना राय, विभा झा, श्रवण कुमार झा आदि मौजूद रहे।

जीएसटी नंबर देने के लिए मांग रहा था रिश्वत, गिरफ्तार

बेरमो : जिले में एक बार फिर भ्रष्टाचार के खिलाफ एसीबी (भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो) का शिकंजा कसा। बेरमो अनुमंडल के फुसरो स्थित तेनुघाट अंचल वाणिज्य कर कार्यालय में कंप्यूटर ऑपरेटर (संविदाकर्मी) श्रवण कुमार को तीन हजार रुपए घूस लेते दबोचा गया। एसीबी (एंटी करप्शन ब्यूरो) धनबाद के टीम ने कार्यालय के बाहर रंजीत होटल के पास से

पकड़ा। छापेमारी का नेतृत्व एसीबी के डीएसपी नितिन खंडेलवाल कर रहे थे। उन्होंने बताया कि जरीडीह प्रखंड के खुंटरी निवासी लखींद्र कुमार महतो की शिकायत पर सत्यापन करने के बाद कंप्यूटर ऑपरेटर को रंगहाथों गिरफ्तार किया गया। लखींद्र महतो ने अपनी बड़ी दीदी गीता देवी, पति रंजीत नायक के लिए जीएसटी नंबर प्राप्त करने के लिए ऑनलाइन आवेदन दिया था। वही देने के नाम पर आरोपी श्रवण तीन हजार रुपए बतौर रिश्वत मांग रहा था। इसकी शिकायत उसने एसीबी में की और त्वरित कार्रवाई की गई।

डीवीसीकर्मी विनुआ बास्के के आकस्मिक निधन पर शोक

बोकारो : दामोदर घाटी निगम चंद्रपुरा ताप विद्युत केंद्र में खलासी के पद पर पदस्थापित विनुआ बास्के का आकस्मिक निधन हृदयाघात से हो गया। उनके निधन पर डीवीसी कर्मियों में शोक की लहर दौड़ गई। सीटीपीएस की इकाई 7- 8 के सुरक्षा बगीचा के समक्ष डीवीसी के अधिकारियों और कर्मचारियों ने शोकसभा का आयोजन कर स्व. विनुआ को श्रद्धांजलि दी। उपस्थित लोगों ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की। मौके पर मुख्य अभियंता श्री पवन कुमार मिश्रा, उपमहाप्रबंधक (प्रशासन) टीटी दास, के-के सिंह, कई उपमुख्य अभियंता, अधीक्षण अभियंता के अलावा उपनिदेशक रविंद्र कुमार, एके चौबे, अक्षय कुमार, सतेंद्र कुमार सिंह, अमरेंद्र कुमार सिंह, राम कुमार दुबे, विनोद कुमार, अनिल कुमार गुप्ता, तपन कुमार दास, निर्मल कुमार झा, कई सप्लाई और ठेका मजदूर आदि ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

खुद मुश्किल में घिरे, तो दूसरों पर कीचड़ उछाल रहे हैं हेमंत : अमर

भ्रष्टाचार के खिलाफ जांच के आदेश को बताया महज राजनीतिक विद्वेष

संवाददाता

बोकारो : झारखंड सरकार के पूर्व मंत्री एवं चंदनकियारी के विधायक अमर कुमार बाउरी ने उनके साथ-साथ भाजपा के पांच पूर्व मंत्रियों के खिलाफ कथित भ्रष्टाचार मामले में जांच के आदेश को राजनीति से प्रेरित बताया है। बोकारो परिसदन में मीडियाकर्मियों से एक बातचीत के दौरान श्री बाउरी ने कहा कि मुख्यमंत्री आज स्वयं भ्रष्टाचार के मामले में जो कार्रवाई झेल रहे है, यह सब उसी का प्रतिशोध है। आज अपने ऊपर जब पड़ी है तो वह दूसरों पर कीचड़ उछालने का काम कर रहे हैं। जांच का आदेश और एसीबी में मुकदमा दर्ज करने की अनुशंसा पूरी तरह से राजनीतिक विद्वेष की भावना से ग्रसित है।

उन्होंने कहा कि 2019 में चुनाव के बाद झामुमो, कांग्रेस और आरजेडी की ठगबंधन सरकार बनी। इसके 34 महीने के बाद यह आदेश उन्होंने दिया है। उन्होंने कहा कि उनकी ओर से किसी भी तरह की संपत्ति की जानकारी छुपाई नहीं गई थी। 2014 और 2019 के चुनाव में हलफनामे में दी गई संपत्ति की जानकारी में स्वाभाविक तौर पर अंतर तो आना ही था। जिस पंकज यादव के पीआईएल पर उन्होंने यह आदेश दिया है, वह जानकारी हलफनामे से ही तो ली गई थी। शपथनामा में उन्होंने पूरी तरह से सत्य जानकारी दी थी। श्री बाउरी ने कहा- 2014 के पहले हमारे पास इनकम का कोई सोर्स नहीं था। हम एक पॉलिटिकल और सोशल वर्कर थे। समाज और परिवार के सहयोग से अपना राजनीतिक जीवन जीते थे। 15 साल का संघर्ष था। चंदनकियारी की जनता ने जिताया और मंत्री बनाया। 2014 में कुछ था नहीं। जो पैतृक संपत्ति थी और हाथ में जो थोड़े-बहुत पैसे थे, वही थे। 2014 में जनता ने जिताया और मंत्री बने। विधायक के रूप में जो वेतन आता है, वही तो करोड़ों का हो जाता है। उस समय की पैतृक संपत्ति के मार्केट वैल्यू में भी अंतर तो आना ही था। उसको उन्होंने जांच बैठाने का आधार बना लिया।

मुख्यमंत्री पर निशाना साधते हुए अमर ने कहा कि आज भ्रष्टाचार के मामले में जब उन पर कार्रवाई हो रही है, तो चाहते हैं कि भाजपा के भी लोगों को किसी तरह फंसा दें। उन्होंने दावा किया कि राज्य में पांच साल के दौरान भाजपा का शासनकाल पूरी तरह से दाग-रहित रहा।

उल्लेखनीय है कि झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने पूर्व मंत्री अमर कुमार बाउरी, रणधीर कुमार सिंह, डॉ. नीरा यादव, लुईस मरांडी एवं नीलकंठ सिंह मुंडा के खिलाफ प्रत्यानुपातिक धनार्जन की अग्रेतर जांच को लेकर पीई दर्ज करने के लिए मंत्रिमंडल सचिवालय एवं निगरानी विभाग (निगरानी) को निर्देश दिया है।

सर्कुलेशन सर्टिफिकेट लेना अब आसान

प्रकाशकों को दी गई आरएनआई के नए एसओपी की जानकारी

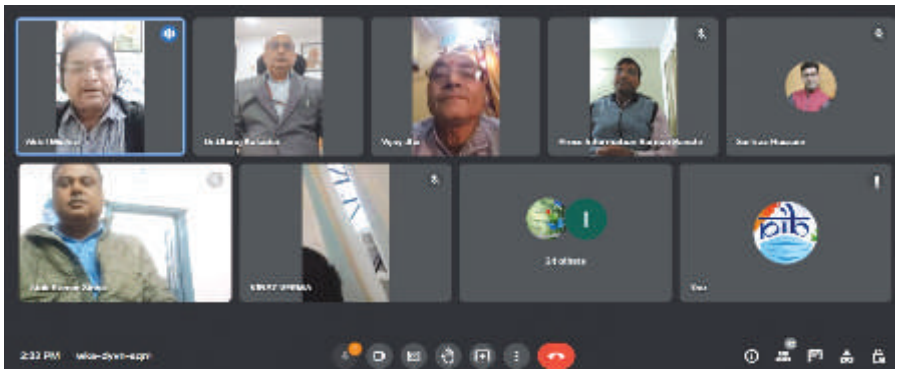

विशेष संवाददाता

रांची : पत्र सूचना कार्यालय, रांची सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से झारखंड से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों/पत्रिकाओं के प्रकाशकों के लिए ऑनलाइन वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इस वर्कशॉप के माध्यम से ऑफिस ऑफ रिजस्ट्रार ऑफ न्यूजपेपर फॉर इंडिया द्वारा सकुर्लेशन वेरिफिकेशन के संबंध में 14 अक्टूबर 2022 को जारी किए गए नए स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर (एसओपी) के बारे में सभी प्रकाशकों एवं चार्टर्ड एकाउंटेंट (सीए) को विस्तृत जानकारी दी गई। आरएनआई नई दिल्ली के अपर पेस पंजीयक डॉ. धीरज काकड़िया ने वर्कशॉप के दौरान सभी प्रकाशकों को बताया कि नए स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर (एसओपी) के माध्यम से सभी प्रकाशकों को सकुर्लेशन सर्टिफिकेट लेने में काफी आसानी होगी। एसओपी को काफी सरल बनाया गया है।

उन्होंने बताया कि प्रकाशकों को नए सकुर्लेशन सर्टिफिकेट के लिए 60 दिन पहले स्थानीय पीआईबी कार्यालय में आवेदन देना होगा। आवेदन देने के 45 दिनों के भीतर सभी कागजी प्रक्रियाओं को पूरा करने के उपरांत उन्हें प्रमाण पत्र देने का प्रावधान किया गया है। डा. काकड़िया ने नए स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर के तहत दिए जाने वाले सभी डॉक्यूमेंट्स, सर्टिफिकेट एवं शपथ पत्र के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

ऑनलाइन वर्कशॉप के दौरान कई प्रकाशकों ने इससे जुड़े कई सवाल भी पूछे। ऑनलाइन वर्कशॉप की शुरूआत में पीआईबी रांची के अपर महानिदेशक अखिल कुमार मिश्रा ने सभी प्रकाशकों का स्वागत किया, जबकि इसका संचालन एफपीओ गौरव कुमार पुष्कर ने किया। धन्यवाद ज्ञापन पत्र सूचना कार्यालय के कार्यालय प्रमुख, एफपीओ ओंकार नाथ पांडेय ने किया।

डुमरा में स्थापित होगी मां सीता की 251 फीट ऊंची प्रतिमा

51 शक्तिपीठों सहित अशोक वाटिका से भी आएगी मिट्टी

सीतामढ़ी : मां जानकी की भूमि सीतामढ़ी की आध्यात्मिक धरोहरों में जल्द ही एक और नया आयाम जुड़ने को है। जिले के डुमरा के राघोपुर बखरी में मां सीता की 251 फीट ऊंची प्रतिमा स्थापना की जाएगी, जिसके लिए तैयारी जोर-शोर से की जा रही है। इसके लिए राघोपुर बखरी के महंत ने काउंसिल को कुल 18 एकड़ 40 डिसिमल भूमि दान दी गई है। वहीं इसके विस्तार के लिए आसपास के किसानों ने भी काउंसिल को अपनी जमीन देने पर सहमति जताई है। रामायण रिसर्च काउंसिल की ओर से आयोजित प्रेसवार्ता में यह जानकारी दी गई। जूना अखाड़ा के महामंडलेश्वर हिमालयन योगी स्वामी विरेंद्रानंद जी महाराज ने बताया कि 51 शक्तिपीठों समेत इंडोनेशिया, बाली, अशोक वाटिका जैसे स्थानों से मिट्टी व जल जाकर तथा मध्य प्रदेश में नलखेड़ा स्थित माता बगलामुखीजी की ज्योत लाकर माता सीताजी को श्रीभगवती के रूप में स्थापित किया जाएगा। प्रतिमा-स्थल को एक शक्ति-स्थल के रूप में विकसित करने की योजना पर काम चल रहा है। स्थानीय सांसद सुनील कुमार पिंटू का कहना है कि अभी और भूमि अधिग्रहित करने के लिए वहां के किसानों से निरंतर संपर्क किया जा रहा। इस स्थल के आसपास की कुल 33.86 एकड़ भूमि का रजिस्ट्री-शुल्क बिहार सरकार के द्वारा माफ कर दिया गया है।

दरभंगा, मधुबनी सहित कई जगहों के रेलवे स्टेशनों की बदलेगी सूरत

दरभंगा : समस्तीपुर रेल मंडल अंतर्गत दरभंगा, सीतामढ़ी और मधुबनी सहित बेतिया, समस्तीपुर, रक्सौल, सहरसा, पूर्णिया व जयनगर स्टेशनों की सूरत जल्द ही बदलने वाली है। इन्हें विश्वस्तरीय स्टेशन के रूप में विकसित के लिए रेलवे बोर्ड को प्रस्ताव भेजा है। रेलवे बोर्ड की स्वीकृति मिली तो कुछ वर्षों में ही हवाई अड्डे की तरह ये स्टेशन दिखने लगेंगे। यहां ऐसी सुविधा विकसित करने का प्रयास होगा कि चारपहिया टैक्सी अथवा निजी वाहनों से आने वाले यात्री एलिवेटेड रोड से सीधे दूसरी मंजिल तक पहुंच सकेंगे। ट्रेन आने पर वहां से वे सीधे संबंधित प्लेटफॉर्म पर उतर सकेंगे। इस योजना के तहत समस्तीपुर स्टेशन पर 300 करोड़ से अधिक राशि खर्च होने का अनुमान है। इसी तरह अन्य स्टेशनों पर भी जरूरत के हिसाब से राशि खर्च होगी। इन स्टेशनों को अगले 45 सालों के विकास व यात्रियों की संख्या में वृद्धि को ध्यान में रख कर मास्टर प्लान बनाया जा रहा है। डीआरएम आलोक अग्रवाल के अनुसार उक्त सातों स्टेशनों को यात्रियों की संख्या के आधार पर विश्व स्तर के विकसित करने की योजना है। रेलवे बोर्ड को प्रस्ताव भेजा गया है।

मिथिला डायरी

परमानन्द से करें जीवन-यात्रा

गुरु-गीता के एक-एक शब्द जीवन में आत्मसात करने वाले हैं। इसमें यही कहा गया है कि 'इस संसार सागर में परमानन्द के साथ जीवन यात्रा करो।' इसमें सदाशिव भोलेनाथ ने माता पार्वती से गुरु की महिमा का उल्लेख करते हुए कहा है-

चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरंजनम्।
नादबिन्दुकलातीतं तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

गुरु चैतन्य हैं, शाश्वत हैं, शांत हैं एवं आकाश से परे हैं। गुरु शब्द ब्रह्म के तीन वर्ग बिन्दु नाद एवं कला से पड़े हैं। इसलिए गुरु को नमन करना चाहिए। बिन्दु वास्तव में विप्लव है, उसे बीज माना जा सकता है और रेखा उस बीज की क्षमता। हर बिन्दु में अत्यंत क्षमता है। यह तो रेखा खींचने वाले पर निर्भर करता है कि वह कितनी लम्बी रेखा खींचना चाहता है। सृष्टि में बिन्दु शुरुआत है, सब कुछ यहीं से शुरू होता है।

मनुष्य का निर्माण दो बिन्दुओं का संजोग है, सायुज्य। दो बिन्दुओं का एक हो जाना गणित के सिद्धान्त के विरुद्ध है। वहां एक और एक जोड़कर दो बनते हैं। परंतु प्रकृति में यह विरोध दिखता है, पुरुष का वीर्य एवं स्त्री का रज (दो बिन्दु) मिलकर एक होते हैं। गुरु को एक बिन्दु माना जाए एवं शिष्य को दूसरा। शिष्य रूपी बिन्दु गुरु रूपी बिन्दु के साथ मिलकर एक हो जाता है, वह अपनी अनंत क्षमता को आत्मसात कर लेता है। बिन्दु आरंभ है। उससे उत्पन्न न देखा उस बिन्दु की रश्मि है। उसका आकर्षण जो अलग-अलग तरह से मोड़-तरोड़कर अक्षर बने। अक्षर से शब्द एवं शब्द से वाक्य, परंतु कागज पर शब्द उकेरने से पहले नाद, अर्थात् स्वर होता है। मौन को चीरता हुआ नाद सृष्टि के आरंभ में सबसे पहले भगवान शिव के डमरू से निकलता था। इसे ब्रह्म नाद भी कहा जाता है।

कुण्डलिनी शक्ति मूलाधार में सोई हुई है, यह शक्ति शुद्ध होकर नाद में परिवर्तित होती है। ध्वनि रूप में नाद शुद्ध शब्द के उच्चारण में परिणित होती है। मूलाधार की चिदाग्नि को धीरे-धीरे शुद्ध उच्चारण द्वारा खोला जाता है। इस हेतु मंत्र बनाए गए, खासकर बीज मंत्र, जिनका लगातार शुद्ध आचरण करके चिदाग्नि, जो मूलाधार मैं है, उसे से सहस्रार तक खींचा जाता है। नाद के उपरांत कला आती है। प्रथम कला सरल रेखा है। उसके बाद वक्र रेखा। पूर्ण विकसित कलाएं 16 से 64 तक आ जाती हैं और कलाओं का अभाव अंधकार है। अमावस का अर्थ अंधकार में वास है। कला का अभाव अंधकार है।

समझने की बात यह है कि कलाएं ज्योति हैं, जो बिन्दु से निकल रही हैं। बिन्दु स्रोत है- स्रोत हमेशा गुरु होते हैं। इसलिए गुरु राज्य को प्रकाश राज्य कहा गया है। वहां प्रकाश अनवरत रहता है। प्रकाश चैतन्यता है, ज्ञान भी और शब्द ब्रह्म का उद्देश्य प्रकाश राज्य में ले जाना है।

शब्द ब्रह्म का उत्पत्ति स्थल

प्रकट तौर पर वाणी की उत्पत्ति विशुद्धि चक्र से होती है, परंतु वास्तव में वाणी की ऊर्जा चिदाग्नि से निकलती है। मनुष्य के शरीर में छह चक्र हैं। इन चक्रों को एनर्जी सर्किट को कंट्रोल करने वाला मानक समझा जाता जा सकता है। साधारणतया यह चक्र सुप्त होते हैं। योगी, तांत्रिक, मांत्रिक, आदिकाल के ऋषि-मुनि एवं वर्तमान काल के ध्यानी, इन सभी की तपस्या का उद्देश्य इन चक्रों को जागृत करना है। जागृत अवस्था में यह चक्र कमल कहे जाते हैं। मूलाधार का कमल चतुर्दलों का, स्वाधिष्ठान का छह दलों का, मणिपुर का दस दलों का, अनाहत का द्वादश दल, विशुद्ध का 16 दलों का, आज्ञा चक्र दो दलों का है। विशुद्ध चक्र से नाद उत्पन्न होता है। यहां कमल 16 दलों का है। 'अ' से लेकर 'अः' तक षोडश स्वर का समवेत् उच्चारण नाद है।

निर्मलं शान्तं जङ्गमं स्थिरमेव च।
व्याप्तं येन जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

सद्गुरु निर्मल हैं, निर्गुण हैं, स्थिर हैं एवं संपूर्ण संसार में व्याप्त हैं। जहां सामान्य जनों का मन दिन में अनेकों बार डोलता है, वहीं सद्गुरु पूर्णतया शान्त एवं विकार रहित हैं। बृहदारण्यकोपनिषद् में स्पष्ट लिखा हुआ है कि आत्मा जब दुर्बलता को प्राप्त होती है, सम्मोहित हो जाती है। इस सम्मोहन की स्थिति में मौन मन को जकड़ लेता है, जहां मोह, वहां बेचैनी। यह बेचैनी मृत्यु के बाद भी पीछा नहीं छोड़ती है, जिस प्रकार जोंक एक तृण के अंत में पहुंचकर दूसरे तृण रूप आश्रय को पकड़कर अपने को सिकोड़ लेती है, उसी प्रकार इस शरीर के समाप्त होने पर आत्मा दूसरे शरीर का आश्रय लेकर मोह के विषय को प्राप्त करने की चेष्टा करती है। जगत हलचल से भरा हुआ है। हर समय अनेक प्रकार की क्रियाएं चल रही हैं, लेकिन जगत का मालिक इन क्रियाओं के बाद भी शान्त है, क्योंकि उसे क्रियाशीलता की आवश्यकता नहीं है। वह आप्त काम है। गुरु गीता यह सिद्ध करती है कि सद्गुरु ईश्वर में कोई भेद नहीं है। सामान्य जन इच्छाएं द्वारा आंदोलित होते हैं। परंतु सद्गुरु इच्छाओं से परे हैं। सामान्य जन इच्छा पूर्ति के लिए ईश्वर की, देवताओं की शरणागति लेते हैं और इसलिए आजीवन अशांत रहते हैं। सद्गुरु ने कामनाओं पर विजय पा ली है। मोक्ष घर से बाहर जाकर जंगलों में रहकर खोजने की चीज नहीं है। मोक्ष कामनाओं को कंट्रोल करने से मुक्त होना है। सद्गुरु ईश्वर के साथ सायुज्य में हैं।

स पिता स च मे माता स बन्धुः स च देवता।
संसार मोहनाशाय तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

माता-पिता, बन्धु-देवता सभी सद्गुरु हैं। संसार में जो मोह फैला हुआ है, गुरु उससे परे ले जाते हैं। मोह का अर्थ बंधन है। मोह किससे बाधता है? फल से बांधता है। मोह का आधार प्रेम होता है, पर उस प्रेम में स्वार्थ की खटास पड़ गई है।

जैसे घोड़े के चेहरे को ढ़क दिया जाता है, जिससे वह सिर्फ आगे देखें, वैसे ही मोह हमारी दृष्टि को भ्रमित कर देता है। मोहविष्ट हम सिर्फ वही देखते हैं, जो हम देखना चाहते हैं। लेकिन मोह एकांत में नहीं पनपता है। मोह के पीछे अथक श्रम होता है। श्रम के परिणाम को नियंत्रित करने की इच्छा मोह है। संसार के अज्ञान का कारण मोह है। समझने की बात है कि दाता ईश्वर हैं, उन्होंने किसे कितना देना है, यह चुनाव किया हुआ है। इसलिए दूसरे की सम्पदा से ईर्ष्या करना अपने को दुःखी करना है। कर्म हमारे हाथ में है, क्योंकि सिर्फ इसी को चुनने का हमें अधिकार मिला है। कर्म का फल परमात्मा, सद्गुरु देते हैं। उनसे हम सिर्फ प्रार्थना कर सकते हैं, मगर वह भी तब, जब हम कर्म करते रहें।

दो-धारी तलवार है मोह

मोह एक प्रकार की दो-धारी तलवार है- भगवान की नियमावली में सबसे उपयोगी हथियार, जिससे वह जगत के लोगों को भ्रमित रखते हैं। ईश्वर तक पहुंचने का रास्ता बहुत आसान है, परंतु उनसे सायुज्य बिठाना कठिन है। मन के अन्दर जाने से ईश्वर मिल जाते हैं और अपने जीवन की लगाम जो ईश्वर को देता है, उसकी मांग समाप्त हो जाती है। माता-पिता, देवता-बन्धु, सबसे मांगा जाता है, ये दिला दो, वो काम करवा दो, फिर सारी मांगों का भार सद्गुरु को दे दिया जाता है। ...और जब सद्गुरु को दे दिया तो फिर चिन्ता किस बात की?

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ) - उदर विकार, हृदय रोग, थकावट आदि का सामना करना पड़ सकता है स्वास्थ्य पर ध्यान दें। कार्यों की सफलता में विलम्ब हो सकती है। मित्रों एवं सम्बंधियों से रिश्ते बनाकर रखें।

वृष (ई उ ए ओ वा वी वू वे वो) - छाती विकार या ज्वर से गुजरना पड़ सकता है, स्वास्थ्य पर ध्यान दें। अनावश्यक खर्च होंगे। कार्य एवं पद में हानि हो सकती है। मित्रों का शत्रुता का व्यवहार होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा का ह्रास होगा।

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा) - स्वास्थ्य में सुधार होगा। नवीन वस्त्रादि का सुख प्राप्त होगा। मन प्रसन्नचित होगा। बन्धुजनों से लाभ होंगे। भाग्य में वृद्धि होगी। पदोन्नति के लिए समय ठीक है। पिता से लाभ प्राप्त होंगे। शत्रुओं पर विजय।

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो) - रोगमुक्त होंगे। गलत चरित्र के लोगों से दूरी बनाएं। कार्यों की सफलता में देर हो सकती है। धनागम के योग बनेंगे। शत्रुओं पर विजय।

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे) - स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्त्री से सम्बन्ध सुधरेंगे। मन प्रसन्न रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी। मन में चंचलता रहेगी। उत्तम भोजन एवं वस्त्र-सुख प्राप्त होंगे। भाइयों से रिश्ते बनाकर रखें लाभ होगा।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो) - बुरे कर्मों के फल प्राप्त होंगे। शरीर में पीड़ा होगी। बवासीर या अपच का शिकार हो सकते हैं। धन का अधिक खर्च होगा। शत्रुओं से झगड़े होंगे। मनोकामनाएं पूर्ण हो सकती है।

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते) - स्वास्थ्य में सुधार होंगे। धन की प्राप्ति के योग बनेंगे। व्यापार में अच्छा लाभ होगा। स्त्रीवर्ग से लाभ। तरल पदार्थों से लाभ होगा। उत्तम भोजन, वस्त्र और शय्या-सुख की प्राप्ति होगी।

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो या यी यू) - सुख आनन्द का अनुभव करेंगे। रोग मुक्त होंगे। स्वजनों से मनमुटाव होंगे। वाणी पर संयम रखें। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगा। सप्ताहांत में थोड़ी मानसिक चिंता बढ़ सकती है।

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे) - स्वास्थ्य पर ध्यान दें। व्यवसाय में हानि हो सकती है। भाग्य साथ नहीं देंगे। सप्ताहांत तक अच्छे समाचार प्राप्त होंगे। राज्याधिकारियों से वाद-विवाद हो सकते हैं। स्त्री-सुख मिलेगा।

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी) - स्वास्थ्य अच्छा होगा। सभी कार्यों में सफलता मिल सकती है। उच्चाधिकारी प्रसन्न होंगे। मित्रों से सहायता मिलेगी। पदोन्नति होगी। व्यय अधिक हो सकते हैं। मां दुर्गा की चालीसा का पाठ करें, लाभ होगा।

कुम्भ (गू गे गो सा सी सू से सो दा) - स्वास्थ्य पर ध्यान दें। पेट सम्बन्धी समस्या हो सकती है। शत्रु परेशान करेंगे। व्यवसाय में हानि हो सकती है। सप्ताह के मध्य में धन एवं सम्मान की प्राप्ति हो सकती है।

मीन (दी दू थ झ दे दो चा ची) - स्वास्थ्य लाभ होगा। यश और आनन्द की प्राप्ति होगी। शत्रुओं की पराजय होगी। व्यय में अधिकता होगी। वाणिज्य व्यवसाय में लाभ हो सकता है। छोटी पर लाभदायक यात्रा हो सकती है।

अधिक जानकारी के लिए
संपर्क करें- 7808820251

भारतीय ज्ञान परंपरा और नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- डॉ.भारद्वाज शुक्ल -

शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व और व्यवहार का परिमार्जन कर उनके भीतर अच्छे विचारों का निर्माण करती है तथा जीवन के मार्ग को प्रशस्त करती है। बेहतर समाज के निर्माण में सुशिक्षित नागरिक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। आज के समय की सबसे बड़ी शक्ति ज्ञान ही है। 'ज्ञान' शब्द देखने में जितना छोटा है, उतनी ही व्यापकता लिए हुए है। ज्ञान का क्षेत्र बहुत विशाल है। यह जीवन-पर्यंत चलता है। आज वही देश सबसे कामयाब है, जिसके पास ज्ञान की अद्भुत शक्ति है। यह ज्ञान ही है जो मनुष्य को अन्य जीव-जन्तुओं से श्रेष्ठ बनाता है। भारत की प्राचीनकालीन शिक्षा व्यवस्था देश में ही नहीं, समूचे विश्व में भी प्रसिद्ध थी। चरित्र निर्माण, आध्यात्मिक ज्ञान के साथ-साथ व्यक्ति के सवार्गीण विकास के उद्देश्य पर आधारित शिक्षा प्रणाली की ख्याति चारों ओर फैली हुई थी। चीन, जापान, तिब्बत तथा लंका आदि देशों से यहां शिक्षार्थी ज्ञानार्जन हेतु आते थे। विभिन्न विषयों के विषय विशेषज्ञ आचार्यों के कारण नालन्दा, तक्षशिला एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय विश्व में सुविख्यात थे। इस तरह प्राचीन भारतीय शिक्षा अपने उद्देश्यों एवं व्यावहारिकता के कारण संसार में अनूठी थी। भारत के पास बौद्धिक अनुसंधान एवं मूल ग्रंथों के धरोहर की एक अत्यंत समृद्ध परंपरा रही है जो कि सदियों पुरानी है। भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है। ऋग्वेद के समय से ही शिक्षा प्रणाली जीवन के नैतिक, भौतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्यों पर केंद्रित होकर विनम्रता, सत्यता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी के लिए सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर देती थी। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा प्रणाली ज्ञान, परंपरा और प्रथाएं मानवता को प्रोत्साहित करती थी। भारत के तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, बल्लभी, उज्जैन, काशी आदि विश्व प्रसिद्ध शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केंद्र थे तथा यहां

कई देशों के शिक्षार्थी ज्ञानार्जन के लिए आते थे। वैदिक काल में महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रसिद्धि थी जिसमें मैत्रीय, रितंभरा, अपाला, गार्गी और लोपामुद्रा आदि जैसे नाम प्रमुख थे। बोधायन, कात्यायन, आर्यभट्ट, चरक, कणाद, वाराहमिहिर, नगार्जुन, अगस्त, भर्तृहरि, शंकराचार्य, स्वामी विवेकानंद जैसे अनेक महापुरुषों ने भारत भूमि पर जन्म लेकर अपनी प्रतिभा व मेधा से विश्व में भारतीय ज्ञान परंपरा के समृद्धि हेतु अतुलनीय योगदान दिया है। प्राचीन काल से ही हमारा भारत उच्च मानवीय मूल्यों एवं विशिष्ट वैज्ञानिक परंपराओं का देश रहा है। भारत की ऐसी संस्कृति रही है कि भारत ने दुनिया को अलग-अलग देश या भूभाग के रूप में माना ही नहीं है।

अयं निजः परो वेति,गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु, वसुधैव कुटुम्बकम्॥

महाउपनिषद के इस सिद्धांत के आधार पर सारा दुनिया को एक परिवार के रूप में मान्यता देने वाला एकमात्र देश भारत है। यह अलग बात है कि पाश्चात्य सभ्यता की आपाधापी में हम भी गलती से यह समझने लगे कि यह सभ्यता भौतिकवाद पर टिकी है, ना कि ज्ञान और अध्यात्म पर।

आज पश्चिमी सभ्यता वाले सभी देश भारतीय संस्कृति और सभ्यता को अपनाने और जानने पर जोर देने लगे हैं। वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों और यहां के जीवन शैली को जानने के लिए अपने यहां कई विभाग से लेकर शोध संस्थाओं की भी स्थापना करने लगे हैं। भारत की परंपराओं को आज विश्व अपना रहा है। अब हमें और हमारी भावी पीढ़ियों को भी भारत की प्राचीन मूल्य को यथोचित महत्व देना होगा। इसके लिए आंतरिक ज्ञान, गुण, शक्ति एवं आदर्शों को ठीक रूप से पहचानना एवं सही दिशा प्रदान करना होगा। प्राचीन भारत ने दर्शन, ध्वन्यात्मक भाषा विज्ञान, अनुष्ठान, व्याकरण, खगोल विज्ञान, अर्थशास्त्र, सांख्य सिद्धांत, तर्क, जीवन विज्ञान, आयुर्वेद, ज्योतिष और संगीत जैसे विभिन्न मानव कल्याणकारी क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित करके संपूर्ण मानव जाति के उन्नति में अत्यधिक योगदान दिया है। प्राचीन भारतीयों द्वारा आविष्कृत विचारों और तकनीकों का आधुनिक विज्ञान व प्रौद्योगिकी की मूल आधार मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

भारत की ज्ञान परंपरा का अतीत प्राचीन एवं गौरवपूर्ण रहा है। भारत सदैव ज्ञान विज्ञान और अध्यात्म का केंद्र रहा है। भारत के लोग मौत से भी नहीं डरने वाले थे, यहां झूठ बोलने की परंपरा नहीं थी, यहां के ज्ञान की समृद्ध परंपरा विश्व की सर्वश्रेष्ठ परंपरा थी। केवल एक कौशल को संकीर्णता के साथ देखनेवाले इंग्लिश एजुकेशन के आधार पर एंग्लॉयमेंट ही भारतीय ज्ञान परंपरा को विकृत करने का कार्य किया। हम विदेशी ज्ञान आधारित विश्वविद्यालयों का केवल अंधानुकरण कर कदापि भारतीय जीवन मूल्यों की शिक्षा की कल्पना नहीं कर सकते। भारत की शिक्षा मौलिक परंपराओं से युक्त थी। भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ें इतनी मजबूत और प्रभावी थी कि लॉर्ड मैकॉले को ये आभास हो गया था कि भारतीयों को पूर्णरूपेण गुलाम बनाना संभव नहीं है। इसलिए उसने शिक्षा व्यवस्था पर प्रहार किया और पुरातन ज्ञान परंपरा के स्थान पर अंग्रेजी शिक्षा की नयी प्रणाली थोप दी। इसके तहत सम्पूर्ण मानव बनाने वाली या भारत के सांस्कृतिक उत्थान वाली व्यवस्था को रोकने का प्रयास था। पूरी व्यवस्था में येन केन प्रकारेण छद्म अंग्रेजी वाहक तात्कालिक योग्यताओं के बल पर भारतीयों के बीच नौकरी के लिए स्पर्द्धा का निर्माण करना था। 64 कला-कौशल सिखाने के साथ मानवीय गुणों और मूल्यों का समावेश कर पूर्ण मानव की परिकल्पना हमारे सामने गौण हो गए। हम जिस ज्ञान परंपरा से दुनिया के सिरमौर थे, देश विदेश के कितने विद्यार्थी भारत के विभिन्न केंद्रों में जिस ज्ञान को ग्रहण करने आते थे, जिस ज्ञान से सहज रूप से अपनी समस्याओं को हल करने की क्षमता आती थी, जिस ज्ञान से नेतृत्व करने की क्षमता आती थी और जिसमें घर, परिवार, समाज, राष्ट्र और पूरी दुनिया को एक सूत्र में जोड़कर रखने की बात थी; हम उसे एकपक्षीय बनाकर संकीर्ण लक्ष्य में ढालने के लिए विवश हो गए। सन 1835 की मैकॉले द्वारा प्रदत्त शिक्षा व्यवस्था के कारण उत्पन्न उस रेस में हम आज तक दौड़ रहें हैं। सबसे बड़ी बात कि नौकरी के योग्य बनानेवाली समझकर हम जिस अंग्रेजी शिक्षा को ढो रहे थे वो आज की चुनौतियों के सामने नौकरी में भी धराशायी हो जाती है। अपने सांस्कृतिक आधार और विरासत को नही समझने के कारण नौकरी में लगे हुए अधिकांश व्यक्ति केवल अनुसरण करते हैं उदाहरण के लिए शिक्षा में पाश्चात्य शोध और पद्धतियां भारतीय शिक्षा के मूल में रहती हैं। अनुसरण से कोई राष्ट्र पीछे रह सकता है, किन्तु रेस में आगे रहने के लिए तो भारत को अपनी संस्कृति, शक्ति और ऊर्जा में सामंजस्य स्थापित कर नवीनता लानी होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 में जैसा लक्ष्य रखा गया है वैसी अर्थात सांस्कृतिक विरासत और संसाधन के ज्ञान के साथ नवीन शोध को पुनर्जीवित करनेवाली शिक्षा व्यवस्था चाहिए। एनईपी- 2020 के ऐसे लक्ष्य के साथ शिक्षा प्राप्त करने के बाद जो पीढ़ी निकलेगी वो नौकरी में जाने के बाद प्रत्येक क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने के साथ अग्रणी बनाने का प्रयास करेगी न कि अनुसरण करनेवाला बनाएगी। बहुविषयी शिक्षा, संपूर्ण विकास, जड़ से जग तक, मानव से मानवता तक की बात राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समावेशित की गई है। यह ऐसे बड़े बदलाव की और कदम बढ़ाने की बात करती है जिसको लागू करने में वही शिक्षक सक्षम होंगें जो अपने आधार और भारतीय संस्कृति पर गर्व कर सकें।

(लेखक सरला बिरला विश्वविद्यालय के फैकल्टी ऑफ कॉमर्स एंड मैनेजमेंट में असिस्टेंट प्रोफेसर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास झारखंड के प्रचार प्रमुख हैं।)

पेज- एक का शेष

ईडी फिर करेगा...

पूर्ण वार्तालाप और वीडियोग्राफी ईडी के पास मौजूद है। इनमें कुछ बिल्डरों को एक बार फिर गिरफ्तार किया जा सकता है। रिकॉर्डिंग पिछले दो वर्षों से की जा रही थी। सिर्फ रांची में तीन बिल्डरों द्वारा 56 एकड़ जमीन को बिल्डरों ने अवैध रूप से ले लिया है, जिसके बारे में तत्कालीन डीसी छवि रंजन ने ग्रीन सिग्नल दे दिया था, लेकिन रांची के तत्कालीन आयुक्त नितिन मदन कुलकर्णी ने इस सभी को अवैध मानते हुए इन पर होल्ड लगा दिया।

खाना खाते वक्त दादा-दादी के...

की मदद से विपरीत दिशा में कंपन व घूर्णन उत्पन्न होता है। इसके परिणामस्वरूप चम्मच का हिलना-डुलना बंद हो जाता है, जिससे बुजुर्गों को खाने में दिक्कत नहीं होती।

हेडफोन की एंटी फ्रीक्वेंसी तकनीक से मिली प्रेरणा

फिलहाल अभिनीत ने अभी अपने उपकरण का प्रोटोटाइप मॉडल तैयार किया है। इसके लिए कुछ पुर्जे उसे रोबोटिक्स के काम से मिले, तो कुछ ऑनलाइन खरीदकर मंगवाए। आनेवाले दिनों में इसका अपग्रेडेड वर्जन वह इंस्पायर मानक के अगले चरण में प्रस्तुत करेगा। उसने बताया कि एंटी शेकिंग स्पून बनाने की प्रणाली की प्रेरणा उसे हेडफोन की एंटी फ्रीक्वेंसी तकनीक से मिली। जिस प्रकार बाहर की आवाज उतनी ही फ्रीक्वेंसी में कान में लगे हेडफोन से निकलनेवाली ध्वनि के कारण नहीं सुनाई देती, उसी प्रकार हाथ कांपने के समान विपरीत बल लगने से एंटी शेकिंग स्पून हाथ नहीं हिलने देता। दूसरे शब्दों में कहें, तो क्रिया-प्रतिक्रिया के सिद्धांत पर यह काम करता है। बीएसएल अधिकारी नवनीत कुमार और शिक्षिका निमिषा के पुत्र अभिनीत को बचपन से ही रोबोटिक्स में काफी रुचि थी। वह आगे चलकर एक सफल इंजीनियर बनना चाहता है। उसने अपने इस नए आविष्कार के पीछे डीपीएस बोकारो के प्राचार्य एएस गंगवार एवं अपने शिक्षकों के मार्गदर्शन के सहयोग को महत्वपूर्ण बताया।

बीएसएल के एसएमएस-न्यू में फिर नया कीर्तिमान

बोकारो : बोकारो स्टील प्लांट के एसएमएस-न्यू ने दो दिनों के अंतराल पर फिर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। आधुनिकीकरण के बाद पहली बार एसएमएस-न्यू की टीम ने 38 हीट बनाकर 37 हीट कास्टिंग किया है। बीएसएल के निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश ने अपने वरिष्ठ सहयोगियों के साथ एसएमएस-न्यू जाकर टीम एसएमएस-न्यू के अधिकारियों एवं कर्मियों की इस उपलब्धि पर बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उन्हें फूल देकर तथा मिठाई खिलाकर उनकी हौसला अफजाई की। श्री प्रकाश ने एसएमएस-न्यू के अधिकारियों एवं कर्मियों को आने वाले समय में बेहतर प्रदर्शन के इस सिलसिले को जारी रखने के लिए उत्साहित किया।

इस अवसर पर अधिशासी निदेशक बीके तिवारी व चितरंजन महापात्रा, मुख्य महाप्रबंधक अरविन्द कुमार सहित एसएमएस-न्यू विभाग के अन्य अधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि एसएमएस-न्यू की टीम ने 15 नवम्बर को 32 हीट बनाकर तथा 31 हीट कास्टिंग कर नया रिकॉर्ड स्थापित किया था। आधुनिकीकृत एसएमएस-न्यू के कास्टर से 28 जनवरी को प्रथम स्लैब की कास्टिंग की गई थी।

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
तालों का, सुर का, नादों का
अवरोहों का, आरोहों का
सहका उत्स मिले जंगल में
वर्षों में, दिन में या पल में
यह निर्भर करता कि हम हैं
पाने को इसको कितने तैयार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल
चल जंगल चल, चल जंगल चल
जंगल में आदिम जनजाति
ये मानवता के हैं थाती
असुर, बृजिया, कोरबा, हो
बात करें इनसे, आओ!
इनके जीवन को समझें तो
हो मानवता का भारी उपकार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल (क्रमशः)

कुमार मनीष अरविन्द

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री.- 12, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई.पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)

आतंकवाद मानवता के लिए खतरा : मोदी

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रधानमंत्री की दो टूक, कहा- इस मामले में हमारी जीरो टॉलेरेन्स नीति

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक बार फिर विश्व समुदाय को बता दिया कि भारत का आतंकवाद के मुद्दे पर रुख एकदम सख्त और दृढ़ है। राष्ट्रीय जांच एजेंसी द्वारा आयोजित तीसरे 'आतंकवाद के लिए कोई धन नहीं' अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए दो टूक शब्दों में उन्होंने कहा कि भारत दशकों से इस समस्या का सामना कर रहा है और लेकिन उसने दृढ़ प्रतिज्ञा ली है कि जब तक आतंकवाद का सफाया नहीं हो जाएगा वह चैन से नहीं बैठेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आतंकवाद को मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा करार देते हुए इसे जड़ से मिटाने के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय से टालमटोल का रवैया छोड़कर इसके खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाने का आह्वान किया। श्री मोदी ने कहा कि इस सम्मेलन का भारत में होने का अपना महत्व है क्योंकि भारत उस समय से आतंकवाद को झेल रहा है जब अधिकतर देशों ने इसको नजरअंदाज कर रखा था। आतंकवाद को समूची मानवता के लिए खतरा करार देते हुए श्री मोदी ने कहा कि इसका गरीब लोगों और स्थानीय अर्थव्यवस्था पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है और लोगों की आजीविका समाप्त हो जाती है।

आतंकवाद को जड़ से मिटाने के लिए इसकी धन आपूर्ति के स्रोतों का पता लगाकर उन पर अंकुश लगाया जाना जरूरी है। इसके लिए उन्होंने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से एकजुट होकर प्रयास करने का आह्वान किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि कुछ देश अच्छे और बुरे आतंकवाद की बात करके परोक्ष रूप से इसका समर्थन करते हैं जो पूरी तरह अनुचित है।

पाकिस्तान पर साधा निशाना

पाकिस्तान का नाम लिए बिना उन्होंने कहा कि कुछ देश विदेश नीति के तहत आतंकवाद का समर्थन करते हैं और इन संगठनों को वैचारिक तथा राजनीतिक समर्थन देते हैं। अंतरराष्ट्रीय समुदाय को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सभी तरह के आतंकवाद के खात्मे के लिए एकजुट होना होगा और आतंकवाद का समर्थन करने वाले देशों तथा संगठनों को भी अलग-थलग करना होगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि आतंकवाद से अगर-मगर या टालमटोल की नीति से नहीं निपटा जा सकता और इसके लिए जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाया जाना बहुत जरूरी है।

आतंकवाद के आयाम बदल रहे

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि बदलते समय के साथ आतंकवाद के आयाम भी बदल रहे हैं और अब यह चुनौती काफी बड़ी हो गई है। उन्होंने कहा कि आतंकवादी संगठन अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल कर रहे हैं, इसलिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय को भी वैश्विक सहयोग और एकजुटता दिखाते हुए प्रौद्योगिकी के बल पर ही इससे निपटना होगा। उन्होंने कहा कि विशेष रूप से आतंकवादी संगठनों को की जा रही धन आपूर्ति पर अंकुश लगाने के लिए प्रौद्योगिकी का बेहतर इस्तेमाल किया जा सकता है। उन्होंने कहा, यदि अंतरराष्ट्रीय समुदाय एकजुट होकर आतंकवाद को होने वाली धन की आपूर्ति पर अंकुश के लिए ट्रैक, ट्रेस एंड टैकल की नीति अपनाता है तो इस पर काफी हद तक अंकुश लगाया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने आतंकवाद की रीढ़ को तोड़ने के लिए संगठित अपराध और कट्टरपंथ विचारधारा को समाप्त करने का भी आह्वान किया। उन्होंने कहा कि कट्टरपंथी विचारों को समर्थन देने वाले देशों को भी अलग-थलग किया जाना चाहिए। श्री मोदी ने कहा कि भारत में आतंकवाद के कारण हजारों जानें गई हैं लेकिन देश ने इस चुनौती का बड़ी बहादुरी के साथ सामना किया है। देश का दृढ़ संकल्प है कि जब तक आतंकवाद का खात्मा नहीं हो जाता वह चैन से नहीं बैठेगा। दो दिन के सम्मेलन में कुल चार सत्र हुए। इसमें आतंकी फंडिंग के औपचारिक व अनौपचारिक सभी तरीकों पर चर्चा हुई। वहीं, शनिवार को आतंकी फंडिंग के लिए नई तकनीक और रास्तों के इस्तेमाल पर चर्चा की गई।

सभी दंत समस्याओं का एक समाधान
डॉ. नरेन्द्र मेमोरियल डेंटल सेंटर
138 को-आपरेटिव कॉलोनी (बोकारो)
दांत एवं मुंह संबंधी सभी बीमारियों के इलाज की पूर्ण सुविधा।
समय : सुबह 9.30 से दोपहर 2.30 बजे तक
संध्या 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक
(शनिवार अवकाश)
डा. निकेत चौधरी (संध्या में)
डा. प्रशान्त कुमार, एम.डी.एस.

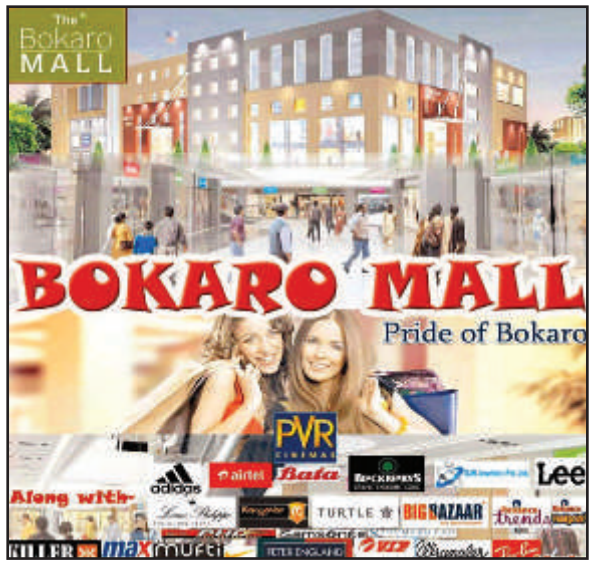

CASHLESS FACILITY CASHLESS FACILITY CASHLESS FACILITY
शिवम् हॉस्पीटल में
सेल के रिटायर्ड कर्मचारियों के लिए
मोतियाबिन्द का ऑपरेशन
एवं लेंस लगाया जाता है।
E-2, LAXMI MARKET, SECTOR-4, B.S.CITY-827004
PH: 06542-232623/233475, MOB: 7488090631

पुराने व जटिल रोगों से हैं परेशान?
होमियोपैथ से निजात पाने के लिये संपर्क करें-
प्रो. डॉ. काशीश्वर किशोर DHMS (Distinction), B.H.M.S (BU).
प्रो. भूपेन्द्र नारायण मंडल होमियोपेथिक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, सहरसा
पूर्व सदस्य- होमियोपैथिक मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
बैठने का स्थान : शॉपिंग सेन्टर, शॉप नं. 58, पहला तल्ला, को-ऑपरेटिव कॉलोनी, बीएस सिटी
(प्रातः 9.30- दोपहर 12.15 एवं संध्या 5.30-6.30)
जर्मन होमियो प्वाइंट, एफ/9, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बीएस सिटी
(सोमवार से शनिवारः संध्या 7.00-8.30), रविवार (संध्या 5.00-8.30)
Mob.- 9431162319 (Consultation after appointment only).